|| दुर्गा चालीसा ||

नमो नमो दुर्गे सुख करनी |

नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ||

निराकार है ज्योति तुम्हारी |

तिहूँ लोक फैली उजियारी ||

शशि ललाट मुख महाविशाला |

नेत्र लाल भृकुटि विकराला ||

रूप मातु को अधिक सुहावे |

दरश करत जन अति सुख पावे ||

तुम संसार शक्ति लय कीना |

पालन हेतु अन्न धन दीना ||

अन्नपूर्णा हुई जग पाला |

तुम ही आदि सुन्दरी बाला ||

प्रलयकाल सब नाशन हारी |

तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ||

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें |

ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ||

रूप सरस्वती को तुम धारा |

दे सुबुद्धि ऋषि-मुनिन उबारा ||

धरा रूप नरसिंह को अम्बा |

प्रगट भई फाड़कर खम्बा ||

रक्षा कर प्रह्लाद बचायो |

हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ||

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं |

श्री नारायण अंग समाहीं ||

क्षीरसिन्धु में करत विलासा |

दयासिन्धु दीजै मन आसा ||

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी |

महिमा अमित न जात बखानी ||

मातंगी अरु धूमावति माता |

भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ||

श्री भैरव तारा जग तारिणी |

छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ||

केहरि वाहन सोह भवानी |

लांगुर वीर चलत अगवानी ||

कर में खप्पर-खड्ग विराजै |

जाको देख काल डर भाजे ||

सोहै अस्त्र और त्रिशूला |

जाते उठत शत्रु हिय शूला ||

नगर कोटि में तुम्हीं विराजत |

तिहुंलोक में डंका बाजत ||

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे |

रक्तबीज शंखन संहारे ||

महिषासुर नृप अति अभिमानी |

जेहि अघ भार मही अकुलानी ||

रूप कराल कालिका धारा |

सेन सहित तुम तिहि संहारा ||

परी गाढ़ सन्तन पर जब-जब |

भई सहाय मातु तुम तब तब ||

अमरपुरी अरु बासव लोका |

तब महिमा सब रहें अशोका ||

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी |

तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ||

प्रेम भक्ति से जो यश गावैं |

दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ||

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई |

जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ||

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी |

योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ||

शंकर आचारज तप कीनो |

काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ||

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को |

काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ||

शक्ति रूप को मरम न पायो |

शक्ति गई तब मन पछितायो ||

शरणागत हुई कीर्ति बखानी |

जय जय जय जगदम्ब भवानी ||

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा |

दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ||

मोको मातु कष्ट अति घेरो |

तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ||

आशा तृष्णा निपट सतावे |

मोह मदादिक सब विनशावै ||

शत्रु नाश कीजै महारानी |

सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ||

करो कृपा हे मातु दयाला |

ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ||

जब लगि जियउं दया फल पाऊं |

तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं ||

दुर्गा चालीसा जो नित गावै |

सब सुख भोग परमपद पावै ||

देवीदास शरण निज जानी |

करहु कृपा जगदम्ब भवानी ||

|| दोहा ||

शरणागत रक्षा करे, भक्त रहे निशंक.

मैं आया तेरी शरण में, मातु लीजिये अंक.

Visit : https://www.aartichalisa.com/durga-chalisa/

Support to Buy anything you required from Amazon :

https://amzn.to/2TcgMkB